अब षड़यंत्र के अगले पन्ने पर खड़ी कुमारी सविता कबाडे

अब सविता बहन की बारी है उन षड़यंत्रकारियों को हिम्मतपूर्वक जवाब देने की, जो कि संपूर्ण ईश्वरीय परिवार को समाप्त करने पर तुले हुए थे। हम इस अवसर पर विरोधी दल के एक और घिनौने कदम की भी जानकारी देना चाहते हैं, जिसमें कुमारी कोनिका वर्मन के मामले के समान षड़यंत्र के तरीके अपनाए गए हैं।

Now it is Miss Savita Kabade standing on the next page of Conspiracy:

Now it is the turn of Savita Bahan to give a befitting reply to the conspirators who are confinhed to completely eradicate the existence of the entire "AVV" family. At this juncture, we propose to present another drastic attempt of the conspirators wherein similar tactics of the conspiracy as that in the case of Miss. Konika Varman have been adopted by the conspirators.

जैसा कि इस लिखत के पृष्ठ-1 में समझाया गया है, कुमारी सविता और श्री गिरीश, जो कि श्री नारायण टी कबाडे के वयस्क बच्चे हैं और कर्नाटक के निवासी हैं, ईश्वरीय ज्ञान के रहस्यों के आधार पर इस आध्यात्मिक विद्यालय में आए और कई अन्य व्यक्तियों के साथ ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करना आरंभ किया। कुमारी कोनिका वर्मन के मामले की तरह विरोधी दल वालों ने दो और षड़यंत्रकारियों ओमप्रकाश अग्निहोत्री और हुबली निवासी अशोक मिस्किन को नया षड़यंत्र प्रारंभ करने के लिए प्रेरित किया। सविता के पिता नारायण टी कबाडे ने (i) सिटी क्लिनिक, हुबली के दो झूठे जन्म प्रमाण-पत्र और (ii) राशन कार्ड की एक फोटोप्रति पुलिस के सामने प्रस्तुत किए, जिसमें उसकी जन्मतिथि 10.01.81 बताई गई तथा उसे अवयस्क बताया गया है और उन फ़र्जी प्रमाण पत्रों के आधार पर उन्होंने भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित के खिलाफ कुमारी सविता को अगुआ करने का एक झूठा मामला दर्ज कर दिया।

As it is explained in the first part of this write up, inspired by the secrets of the spiritual knowledge emerging from Kampil Village, Miss Savita along with her brother Mr. Girish, both being major children of Narayana T. Kabade, of Karnatak came to "AVV", and started acquiring the pearls of advanced Ishwariya Knowledge along with many others. As in the case of Miss. Konika Varman, the "Opposition Group" could influence two more people Mr. Om Prakash Agnihotri of Kampil and Ashok Miskin of Hubli, Karnatak State, to initiate a fresh conspiracy. Savita's father Narayan T. Kabade hs filed a complaint that his daughter Savita was kidnapped by our Spiritual Brother Baba Virendra Dev Dixit by creating two false birth certificates of (i) City Clinic, Hubli & (ii) a Photostat copy of ration card showing that her date of birth as 10.01.81 and as such she is a minor.

नारायण टी कबाडे से उनके बयान में यह कहलवाया गया था कि जब दिनांक 25.11.98 को अपनी बेटी की खोज करने के लिए उन्होंने आध्यात्मिक विद्यालय वासियों से संपर्क किया तो आध्यात्मिक विद्यालय के गुण्डों ने उन पर हमला किया। विवेचक द्वारा कुमारी सविता की आयु तथा उसकी पवित्रता के सम्बन्ध में चिकित्सीय जाँच कराने के आदेश देने पर पुलिस वाले कुमारी सविता को ज़बरदस्ती सरकारी अस्पताल, फतेहगढ़ ले गए। कुमारीपन के परीक्षण के विरुद्ध आदेश जारी करने वाली, स्टेटमेंट्स देने वाली, अपना आक्रोश जताने वाली राष्ट्रीय महिला आयोग का अस्तित्व रहा या नहीं रहा, अगर रहा तो कहाँ रहा, ढूँढ़ने पर भी इसका जवाब न मिलने के पश्चात् कुमारी सविता ने खुद मुकाबला करते हुए कहा कि वह एक पवित्र कुमारी है और वह अपनी अंदरुनी चिकित्सीय जाँच नहीं कराना चाहती, किन्तु पुलिस ने उसे कुमारीपन का परीक्षण करवाने की धमकी दी- अन्यथा इसका परिणाम बुरा होगा। इस पर कुमारी सविता द्वारा ज़ोर से चिल्ला-2 कर इन्कार करने पर डॉक्टर को भय लगा, दिल धड़कना बंद हो गया, मिले हुए धन से अन्याय करने की हिमाकत उड़ गई, तो उनका कुमारीपन का परीक्षण रद्द करना पड़ा और हमें अचानक याद आ गई दुर्योधनों-दु:शासनों द्वारा चीरहरण के साथ ही साक्षात् भगवान द्वारा नारियों की लाज बचाई जाने की बात। हाँ, कुमारियों पर सब-कुछ अप्रिय घटित होने के बाद ही तो राष्ट्रीय महिला आयोग अपने आक्रोश को प्रभावित ढंग से जता पाएगी !

Mr. Narayan was trained to give a statement that the rowdies of the Adhyatmik vidyalaya have attacked him when he approached the Adhyatmik vidyalaya inmates in search of his daughter on 25.11.98. As per the enquiry officers verifications under section 161 Cr.P.C. it was suggested that a medical test as to the age as well the virginity be conducted for Kumari Savita. The police accordingly have forcibly taken Miss. Savitha to the Government Hospital, Fatehgarh.

Miss. Savitha affirmed in presence of the Police, that she is a major and stands virgin, but the police have paid a deaf ear and threatened her to get the virginity test conducted, as otherwise she has to face dire consequences.

With doubts in the mind as to how far it is true that the National Commission for Women who passes the orders against virginity test; expresses time to time resentments against such virginity tests; release strong statements in the News Media, actually exists, and if at all it exists, how far it is true that they would come to rescue practically and prove that they simply are not confined to statements and resentments in this connection; and in the absence of a suitable answer to her enthusiasm, Miss. Savita decided to fight it out with her own purity and ability.

It was for the strong protest of Kum. Savitha, backed by the power of purity instilled by the Supreme Father, the doctor had to drop her arrangements for conducting the virginity test being unable to withstand Savita's strong refutation combined with impregnable courage which resulted in; a change in heartbeat, fear of losing her job as well reputation. She could not justify the funds received by her for the purpose and the police were accordingly informed. It suddenly stuck to our minds the epic; It was the one and only Supreme God Father and none other else coming to the rescue of the woman at the time when Duryodhan and Dussasan were attempting to undress her. Yes, the commission for women, will be able to express their grief and dissent post the untoward incidents against the virgins.

हमने मैजिस्ट्रेट के न्यायालय में कुमारी सविता की आयु और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक विद्यालय में रहने की उनकी इच्छा के संबंध में एक शपथ-पत्र प्रस्तुत किया था। हमने कर्नाटक राज्य के लेमिटन गर्ल्स हाई स्कूल द्वारा जारी किया गया स्थानांतरण प्रमाणपत्र (ट्रांसफर सर्टिफिकेट) भी प्रस्तुत किया था, जिसमें कुमारी सविता की जन्मतिथि स्पष्ट रूप से 10.06.1980 बताई गई है। न तो उक्त साक्ष्य और न ही कुमारी सविता एवं श्री गिरीश के मौखिक साक्ष्य को संज्ञान में लिया गया।

We produced in the magistrate court; an affidavit on hand executed by Kum. Savitha as to her age as well her wish to stay at this Ashram for acquiring spiritual knowledge. A Transfer Certificate issued by Lamiton Girl's High School of Karnataka State was also produced by us wherein the date of birth of Kum. Savitha was clearly stated as 10.06.1980. Neither the evidences produced, nor the oral evidence of Kum. Savitha and hker brother Mr. Girish were taken into cognizance by the said court.

तथापि, उसे इटावा के नारी निकेतन में उसकी इच्छा के विरुद्ध अवैध रीति से रोक कर रखा गया । अतः सविता जो कि मूल एवं सृजित, दोनों प्रकार के प्रमाणपत्रों के अनुसार वयस्क सिद्ध होती है; उसका व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार, जिसकी भारतीय संविधान में गारंटी दी गई है, उसका हनन किया गया / उससे उसको वंचित कर दिया गया।

यह नारी निकेतन भेजने का निर्णय पूर्ण रूप से मैजिस्ट्रेट के अधिकार क्षेत्र के बाहर और गैर-कानूनी था। कोई मैजिस्ट्रेट भी सभी अवयस्कों का कानूनी संरक्षक या उचित रूप से नियुक्त संरक्षक नहीं होता है।

In result, she was illegally held in the Nari Niketan for no fault of her. Despite the open fact tht she is proved to be a major according to the original birth certificate, as well the created one, she was betrayed and deprived with the right of freedom accorded by the Indian constitution.

The direction of the Magistrate that she shall be detained at Nari Niketan is absolutely without Jurisdiction and illegal. Even the Magistrate, even though he thinks that the girl is a minor; of-course it is not so in this case, the fact is that he cannot be a material Guardian or a duly appointed Guardian of all Minors.

अब माननीय सत्र न्यायाधीश, फर्रुखाबाद का आदेश जो मार्च, 99 में पारित हुआ, उनके ही शब्दों में स्पष्ट करना उचित रहेगा।

"क्रिमिनल रिविजन नं. 13/99 कुछ अंश तक अनुज्ञात किया जाता है और जजमेंट का आखरी पैरा इस प्रकार बदली किया जाता है कि निगरानीकर्ता रिविजन लिस्ट (कुमारी सविता) कंपिल स्थित बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित के आश्रम या उनकी अन्य कोई शाखाओं के अलावा कहीं भी जा सकती है। यह आदेश आश्रम के गतिविधियों की जाँच पूरी होने तक अमल में रहेगा।

11 मार्च, 1999 ***सेशन्स जज,***
फर्रुखाबाद*"*

Now we prefer to place some extracts from the judgment of Honorable Sessions Judge, Farrukhabad.

"On an observation of the criminal revision petition No. 13/99, certain parts of the judgment are verified and the order gets changed to the extent that the revisionist (Kum. Savita) can opt to go to any other place except the Kampil Ashram or any other branches maintained by Baba Virendra Deo Dixit. This order will be applicable until the enquiry of the situations in the ashram is completed fully. "

11 March, 1999 Sessions Judge , Farrukhabad.

माननीय सत्र न्यायाधीश, फर्रुखाबाद की दृष्टि में यह रोक लगाने का कारण यह था कि भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित के खिलाफ कई मुकदमे लम्बित थे। भ्राता जी की सत्यता साबित होकर सारे बलात्कारों वाले आरोपों से उन्हें दोषमुक्त करार करने तक याने लगभग 13 साल तक भ्राता जी के खिलाफ जाँच प्रक्रिया चलती रही और सत्र न्यायाधीश का आदेश परोक्ष रूप में ही क्यों न हो, निरंतर जारी रहा। वे अधिकारीगण, नेता गण जो कि माइक के सामने महिलाओं की स्वतंत्रता, उनके अधिकार, समानता और कल्याण के लिए बरसाती मेढ़कों की तरह चिल्लाते हैं, जिला स्तर पर न्यायालयों द्वारा लगाई जा रही अनिश्चितकालीन रोक के समक्ष नतमस्तक रह गए। कुमारी सविता के लिए लोकतांत्रिक मौलिक अधिकारों का हनन तो हो ही गया।

The reason for imposing the restriction in view of the learned Sessions Judge, Farrukhabad, as felt by him is that investigation was pending in several cases against spiritual brother Virendra Deo Dixit. The lengthy process of the courts in discharging Spiritual Brother Virendra Deo Dixit, Kamla Devi Dixit and "AVV" family members from the fake allegations of rape cooked in the oven of conspiracies went on for a period of 13 years, when the truth has regained its dignities; even indirectly, the orders of restricting Savita from spending her life at Ashram stood applicable for the entire 13 years period.

The authorities and the leaders who speak in high voices regarding the rights and welfare of women; resembling the shoutings of group of frogs in the rainy season stood; bowed before the restrictions imposed by the district level courts for an indefinite period. Alas! The constitutional rights according to a young girl Savita lost their breath under the red tape.

कुमारी सविता को कई दिनों के बाद अचानक नारी निकेतन, इटावा से मुक्त कर दिया गया। अब वह अपनी इच्छा अनुसार कंपिल आध्यात्मिक विद्यालय, जो एकमात्र सुरक्षित स्थान रहा, वहाँ जाने की स्थिति में रही ही नहीं; क्योंकि कोर्ट के द्वारा वहाँ जाने से रोक लगा दी गई थी। 18 वर्ष की छोटी-सी कन्या को निर्दयता से इटावा की सड़कों पर छोड़ दिया गया। जिसके साथ कोई नहीं, उसके साथ शिवबाबा तो होगा ही। वह उसी परमात्मा की छत्रछाया में भाड़े के गुण्डों से बच निकल कर अन्य किसी सुरक्षित जगह पहुँचने में सफल हो सकी, जहाँ शिवबाबा की छत्रछाया उसका आसरा बनी रही। यद्यपि इस दुनियाँ की कोर्ट ने आध्यात्मिक विद्यालय में जाने से उस पर रोक तो लगा दी; तथापि शिवबाबा की अलौकिक कोर्ट ने उसे सुरक्षित स्थान में पहुँचा ही दिया।

It's after a long, Miss Savita, a young girl of 18, was released to the roads suddenly and mercilessly from Nari Niketan, Itawa. Now, she stood restricted by the court from going to Kampil "AVV" which was the only safety place that she knew. For those who have none on earth; there is Shiv Baba for them. Savita could however and with much difficulty; protecting herself from the arranged rowdies under the canopy of Shiv Baba reach another safer place provided by Shiv Baba; well, this material world has restricted her from going to Kampil "AVV" ; the eternal court has provided a safe shelter where the canopy of Shiv Baba stood in physical.

अब सविता के पिता नारायण टी कबाडे द्वारा सच्चाई की दिशा में छोड़ा गया अगला तीर जो षड़यंत्र का पर्दाफाश करता है

हम बार-2 इस बात पर बल नहीं देना चाहेंगे कि किस प्रकार हमारे आध्यात्मिक विद्यालय के मुखियाओं का दिन-प्रतिदिन उत्पीड़न किया जा रहा है। नारायण टी कबाडे ने दिनांक 26.9.2002 के अपने नोटरीकृत शपथपत्र में स्पष्ट रूप से बताया कि वे मामले को तत्काल वापस नहीं ले सके; क्योंकि उन्हें डर था कि भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित यह षड़यंत्र रचने के खिलाफ उन पर मुकदमा दर्ज कर सकते हैं। उन्होंने भ्राता जी के खिलाफ मुकदमा वापस ले लिया और इस तथ्य की पुष्टि की कि उनके बच्चों ने कम्पिल गाँव के ईश्वरीय विश्वविद्यालय से संपर्क किया है; किंतु किसी के प्रभाव में आकर नहीं। शपथपत्र में भ्राता जी के खिलाफ झूठा मामला दर्ज करने के लिए भ्राता जी से माँगी गई माफी मामला साफ कर देती है।

आखरीन दिनांक 23-10-2002 को सेशन्स कोर्ट ने इस केस को खतम करते हुए नारायण टी कबाडे के नोटरीकृत शपथपत्र को स्वीकार किया।

Now the arrow in the route of Truth from Narayana T. Kabade, the father of Savita as well the complainant opens the curtains of conspiracy.

We need not again and again impress upon the readers as to how the Ishwariya family along with our Spiritual Brother and the main spiritual sister were harassed day by day. Savita's father Narayana T. Kabade, in his notarized Affidavit dated 26-9-2002, has categorically stated that he could not withdraw the case immediately out of fear that Spiritual Brother Virendra Deo Dixit may lodge case against him for having made the conspiracy. He has withdrawn the case against Spiritual Brother Virendra Deo Dixit and confirmed the fact that his children have approached the Ishwariya Viswa Vidyalaya at Kampil Village on their own accord but not under anybody's influence. The affidavit contains his excuses from Spiritual Brother Virendra Deo Dixit for having lodged a false case. At last on 23rd October 2002, the Sessions Court while closing the chapter of this case, has accepted the notarized